उमराव जान

(फ़िल्म का समयः दो घंटे बीस मिनट)
मिर्ज़ा हादी 'रुसवा' के एक उपन्यास पर आधारित मुज़फ़्फ़र अली की फ़िल्म

पात्र-परिचय

दारोग़ा, उमराव के अब्बा
दिलावर ख़ाँ, जिसके ख़िलाफ़ दारोग़ा ने कभी गवाही दी थी और इस कारण उसकी दारोग़ा से दुश्मनी है
अमीरन की माँ, दारोग़ा की पत्नी
अमीरन उर्फ़ उमराव जान 'अदा', जिसका दिलावर ख़ाँ ने दारोग़ा से बदला लेने के लिए अपहरण किया और फिर ख़ानम को बेच दिया
अमीरन का भाई
गाड़ीवान बख़्श, दिलावर का साथी
रामदेई, जिसे कुछ आदमी मेले से भगा ले जाते हैं और किसी बेगम को बेच देते हैं। बाद में यह नवाब सुलतान की माँ की सेवा करते दिखाई देती है और अंत में नवाब सुलतान की बेगम के रूप में
ख़ानमजान, लखनऊ की एक वेश्या जो उम्र हो जाने पर छोटी लड़कियों को ख़रीदकर उन्हें नाच-गाना सिखाती हैं और फिर उनसे वेश्या-वृत्ति करवाती हैं
बिस्मिल्ला जान, ख़ानम की बेटी
बुआ हुसैनी, ख़ानम की मामा[1]
मलका, ख़ानम की नौची[2]
बहार, ख़ानम की नौची
मौलवी साहब, मक़तब के मौलवी और बुआ हुसैनी के आशिक़
उस्तादजी ख़ान साहब, जो ख़ानम की नौचियों को नाच-गाना सिखाते हैं
गौहर मिरज़ा, ख़ानम के घर पला लड़का जो कि ख़ानम और उनकी नौचियों के लिए गाहक जुटाता है
नवाब सुलतान, कला-पारखी और उमरावजान के आशिक़

---

[1] maidservant. As a masculine noun, this word would mean 'maternal uncle'.
[2] a nautch, a dancing girl.

ख़ाँ साहब, जिसे नवाब सुलतान गोली मारते हैं
नवाब छब्बन साहब, बिस्मिल्ला के आशिक़ नवाब
बेगम फ़ख़रुन्निसा, नवाब छब्बन की माँ
जौहरी पन्नामल
मक्का, खानम का एक दरबान
नवाब बन्ने साहब की बेगम
बड़ी बेगम, नवाब बन्ने साहब की माँ
डाकू फ़ैज़अली, जो उमराव पर फ़िदा हो जाता है
राजा साहब, जिनके साथ बिस्मिल्ला ख़ानम के घर से भगाये जाने के बाद रही
शारित मियाँ, उमराव का एक प्रशंसक
कोठे का दरबान, नवाब सुलतान का बेटा, बुढ़िया, आदमी, औरतें, सिपाही, बड़ी बी, मीर साहब आदि।